International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-01-2025, Accepted: 17-02-2025, Published: 04-03-2025
Volume 11, Issue 1, 2025, Page No. 50-54

21वीं सदी के हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित किन्नर समुदाय की अस्मिता का यथार्थ

आकाश यादव
शोधार्थी, हिंदी विभाग शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, मुरैना, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
21वीं सदी के बदलते परिवेश में तकनीकी के साथ–साथ समाज, व्यक्ति और साहित्य में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। उपन्यास आधुनिक काल का जीवन्त साहित्यिक रूप है। 21वीं सदी का उपन्यास साहित्य संसार के विचारों भावों तथा संकल्पों की शाब्दिक अभिव्यक्ति का साधन है। हिंदी उपन्यास का विषय गत फलक विस्तृत रहा है। हिंदी उपन्यास साहित्य अपने जन्म से लेकर वर्तमान समय तक अनेक विषयों को प्रवाहित करता रहा है। समसामायिकता को प्रस्तुत करना 21वीं सदी के उपन्यासों की विशेषता रही है। वस्तुतः तो समाज में जो कुछ भी व्याप्त है, वह उपन्यासकार की संवेदना, चिंता और चिंतन का विषय होता है। साहित्य के माध्यम से ही साहित्यकार समाज से संवाद स्थापित करता है और समाज की चिंताओं को साहित्य के पटल पर उभरता है। उपेक्षित जन समुदायों को वाणी देना 21वीं सदी के हिंदी उपन्यास साहित्य की महत्वपूर्ण विशेषता है। आज हिंदी उपन्यास अनेक उपेक्षितों के पास पहुंच रहा है। इसके लिए किन्नर अर्थात थर्ड जेंडर जीवन भी अछूता नहीं है। समाज का दायित्व था कि वह थर्ड जेंडर के रूप में पहचाने जाने वाले इस तीसरे मानवीय प्राणी को अंगीकार करता। दुर्भाग्य बस ऐसा हुआ नहीं। फिर साहित्यकारों का ध्यान इस और गया। 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में वर्तमान जीवन की विभिन्न समस्याओं के साथ किन्नर समुदाय की अस्मिता को भी विशेष रूप से चित्रित किया गया है। कई उपन्यासकारों ने किन्नर जीवन केंद्रित उपन्यास लिखकर उनके उपेक्षित जीवन को समाज के सम्मुख लाने का प्रयास किया है।

मूल शब्दः थर्ड जेंडर, जैविक संरचना, तीसरा मानवीय प्राणी, अस्मिता

हिन्दी कथा साहित्य में विधा की दृष्टि से उपन्यास का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है, जिसमें मानव जीवन से सम्बद्ध तमाम कोनों–अंतरों में झांकने की कोशिश गई है, परन्तु शोध के सन्दर्भ में अध्ययन की दृष्टि से थर्ड जेंडर से जुड़े उपन्यासों को खोजना प्रारम्भ किया तो पाया कि यह विषय इतना उपेक्षित है कि अंगलियों पर गिने जाने योग्य रचनाएं ही उपलब्ध होती हैं। हिंदी में थर्ड जेंडर जीवन पर केंद्रित उपन्यास लेखन की शुरुआत सन 2002 में लेखिका नीरजा माधव के उपन्यास 'यमदीप' से हुई। 21वीं सदी के साहित्य जगत में यह उपन्यास किन्नरों पर रचित पहला स्वतंत्र उपन्यास माना जाता है। एक ओर यह उपन्यास लेखिका नीरजा माधव को स्त्री लेखन एवं दलित लेखन की भीड़ से अलग करता है तो दूसरी ओर नारी अस्मिता और शोषित उपेक्षित वर्ग के अनछुए पहलुओं को भी सामने रखता है जिनकी ओर आज तक कोई सजग लेखनी उन्मुख ही नहीं हुई। उपन्यास का 'यमदीप' नामकरण अपने शीर्षक की प्रतीकात्मकता से 'थर्ड जेंडर' को बखूबी जोड़ता है। थर्ड जेंडर की तुलना घूरे (कूड़े के ढेर) पर जलाए जाने वाले यमदीप से की गई है। इस उचित प्रतीक के संदर्भ में प्रो. नीरू लिखती हैं– "लेखिका ने 'तीसरे लिंग' की समूची त्रासदी को, उसके प्रति समाज की उपेक्षा और क्रूरता को, उस उपेक्षा से उपजे उसके दुःख, क्षोभ और आक्रोश को तथा इस सबके बावजूद उसकी सदाशयता को, उसकी मानवीय करुणा को, उसके साहस को और उसकी निर्भीकता को व्यंजित करने के लिए एक बहुत सार्थक प्रतीक चुना है।" जिस प्रकार यम के नाम से घूरे पर जलाए जाने वाले दीप को पलट कर नहीं देखा जाता है उसी प्रकार माता–पिता द्वारा थर्ड जेंडर बच्चे को एक बार त्यागने पर फिर उसकी खोज खबर नहीं ली जाती है। थर्ड जेंडर जीवन भी यमदीप की भांति अपेक्षित है। यमदीप उपन्यास में लेखिका ने नाजबीबी के माध्यम से किन्नर जीवन के विभिन्न अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला है। उपन्यास में दो कथाएं – नाजबीबी और सोना की तथा मानवी और आनंद की समानान्तर चलती हैं। बीच–बीच में एक–दूसरे के निकट से गुजरती हैं। नाजबीबी उर्फ नंदरानी समाज की दृष्टि से किन्नर होने के कारण उपेक्षित है, लेकिन उपन्यास में अपनी सम्पूर्ण मानवीय गरिमा और औदात्य के साथ उपस्थित है। जहां तथाकथित मनुष्यों की संवेदना नहीं पसीजती, वहां नाजबीबी अपने साथियों के साथ पगली का प्रसव कराती है और पगली की जीवन–समाप्ति पर स्वयं ही बच्ची को पालने का निर्णय लेती है। फिर उसे पालने के लिए किए जाने वाले प्रयासों को जैविक माता–पिता द्वारा किए जाने वाले प्रयासों से किसी भी अर्थ में कम नहीं आंका जा सकता। नाज बीबी छैलू के साथ मिलकर सोना के लिए हर सम्भव सुविधा जुटाने का प्रयास करती है। कानूनी और पुलिसिया अत्याचार से बचने के लिए उसको छिपाकर पालती है। एक गिरिया रखकर सोना के पालन–पोषण के लिए धन की व्यवस्था करती है। उसके सुख–दुःख से प्रभावित होती है। यह स्वयं एक संस्कारी परिवार में पली–बढ़ी थी। माता–पिता ने घर से निष्कासित नहीं किया था, पर शेष बहनों भाइयों के व्यवहार ने परिवार में दमघोंटू वातावरण बना दिया था, तो नंदरानी ने स्वयं ही स्व–निष्कासन का मार्ग चुन लिया था। यही कारण था कि वह सोना को अच्छी कहानियां सुनाकर, अच्छी बातें करके संस्कारवान बनाने का प्रयास करती है। शिक्षा के महत्त्व से परिचित है, इसलिए सोना को स्कूल भेजती है, पर बड़ी होती सोना की मानसिक और शारीरिक अवस्था से अनभिज्ञ है, तभी तो सोना को मासिक की शुरुआत होने पर वे उसे नजदीक के डाक्टर के पास ले जाते हैं। डाक्टर की पुलिस को दी सूचना के आधार पर ही सोना का जीवन अस्त–व्यस्त हो जाता है, लेकिन 'सत्यं शिवं सुन्दरं' की भारतीय दार्शनिक पद्धति का अनुसरण करते हुए लेखिका ने सोना के पुनरुद्धार का मार्ग प्रशस्त किया है। इसके लिए लेखिका ने मानवी और डी. एम. आनन्द कुमार को माध्यम बनाया है। इसके लिए प्रारम्भ से ही नाजबीबी और मानवी के मध्य एक कोमल तंतु विकसित होते दिखाया है।

नाजबीवी को सोना के स्कूल जाने और उसके शरीर में आए बदलाव के फलस्वरूप उसे अपने बचपन की स्मृति हो आती है। नंदरानी अपने स्कूली शिक्षा के दौरान आए शारीरिक बदलाव को महसूस करने लगी थी। 'क्या नंदरानी, तुम कैसे चलती हो ? हम लोगों की तरह चलो ।.. कहीं हिजड़े देख लेंगे तो तुम्हें भी वही

समझ बैठेगे।' यहाँ समझ का मसला सामाजिक संरचना में इनकी स्थिति से है जिसे समाज द्वारा अपमान जनक बनाया गया है। हमारे समाज में जेंडर की सामाजीकरण की प्रक्रिया के तहत स्त्री और पुरुष व्यवहार व स्वभाव को ही समाज में स्वीकृति दी जाती है। ऐसे में इस समुदाय का व्यवहार समाज में स्वतः ही अव्यवाहारिक माना लिया जाता है। क्योंकि जेंडर निर्मिति में हमें इनके यौन व्यवहार की शिक्षा दी ही नहीं जाती बल्कि इनके यौन व्यवहार को क़ानूनी अपराध माना जाता है। ऐसे में इस प्रकार के बच्चों का प्राकृतिक यौन व्यवहार उन्हें स्वयं से नफरत और आत्महत्या को मजबूर करता है। 'यमदीप' उपन्यास में यही सवाल नीरजा माधव नंदरानी अर्थात नाजबीबी के माध्यम से सामने लाती हैं। नंदरानी के माता–पिता भी नंदरानी को अपने पास रखना चाहते हैं। नंदरानी की मम्मी का कहना था कि वह उसे पढ़ा–लिखाकर अपने पैर पर खड़ा कराएगी। किसी के भरोसे नहीं रहना पड़ेगा उसे। मगर फिर एक सवाल महताब गुरू उठाते हैं कि 'माता जी किसी स्कूल में आज तक किसी हिजड़ा को पढ़ते–लिखते देखा है ? किसी कुर्सी पर हिजड़ा बैठा है ? पुलिस में मास्टरी में, कलेक्टरी में ३किसी में भी ?३अरे इसकी दुनिया यही है, माताजी ३कोई आगे नहीं आएगा कि हिजड़ों को पढाओ, लिखाओ नौकरी दो..जैसे कुछ जातियों के लिए सरकार कर रही है.. ।' महताब गुरु के माध्यम से लेखिका ने समाज में इनके प्रति अपनाएं गए सत्ता के सामाजिक चरित्र को उघारा है। उपन्यास की दूसरी पात्र मानवी गांव की स्थितियों से निकलकर शिक्षा ग्रहण करती है। शहर में आकर नौकरी करती है। पत्रकारिता के क्षेत्र में व्याप्त सड़ांध से टकराती है, बार–बार अपने को बचाती है। जीवन का संघर्ष उसके भीतर पर्याप्त संवेदनशीलता का विकास करता है। वह पत्रकार है, निर्भीक है और स्त्रियों के प्रति संवेदनशील है, उनके जीवन से जुड़े मुद्दों को समझने का प्रयत्न करती है। तभी तो प्राणों पर खेलकर सोना की रक्षा के लिए व्यवस्था से टकरा जाती है। ऐसी भ्रष्ट व्यवस्था, जिसमे पुलिस और नेता दोनों की मिलीभगत थी और उसके अपने पत्रकार साथी भी उसे अकेला छोड़कर भाग गए थे। परिवार के स्तर पर भी सामान्य, परम्परागत ईर्ष्यालु स्थितियों से जूझती है।

यह समुदाय केवल मुख्यधारा से बाहर ही नहीं किया गया बल्कि समाज में इनके प्रति डर और अफवाहों को भी लोगों में भरा गया। ताकि लोग इनके प्रति नकारात्मक रवैया अपनाए और यह समाज मुख्यधारा में आने का प्रयास न कर सके। साथ ही अलगाव की जिंदगी जीने को मजबूर बना रहे । इस बात का जिक्र यमदीप उपन्यास की पत्रकार मानवी करती है 'ऐसा सुना जाता है कि आप लोग युवकों को बहला–फुसलाकर जबरन उनका ऑपरेशन करके हिजड़ा बना देते हैं'। महताब गुरु इन अफवाहों को नकारते हैं और कहते हैं 'हमारी बस्ती में जल्दी कोई इंसान का पूत घुसता है ..कि किसी के आते ही हम उसे तुरंत आपरेशन कर देंगे पकड़कर ? डाक्टरी खोले बैठे हैं इसी कोठरिया में क्या ? यह देखो हमारा अंग, कोई काटा है कि अल्ला–रसूले वैसे भेजा है ? ' मानवी का यह प्रश्न मुख्य धारा के समाज का प्रश्न था। किन्नर समुदाय के बारे में एक भ्रम फैलाया जाता है कि हिजड़े लोग सामान्य मनुष्यों को भी बलात् उनका लिंग परिवर्तन करके या किसी भी प्रकार हिजड़ा बनाते हैं और अपनी समुदाय में शामिल कर लेते हैं। यह निहायत कोरी अफवाह है। लिंग परिवर्तन यदि सामान्य रूप से पढ़े–लिखे डॉक्टर जल्दी नहीं करवा पाते तो इन हिजड़ों के पास कौन सा मेडिकल या तकनीकी ज्ञान है, अथवा ऑपरेशन थिएटर है, जहां वे इस प्रकार की प्रैक्टिस करेंगे? एनेस्थिसिया या दवाओं का ज्ञान इन हिजड़ों को कहां से होगा, जिससे उनका मरीज ठीक हो जाए, जिस काम को एक दक्ष डॉक्टर भी नहीं करता, उसे यह कैसे करेंगे ? यही कारण है कि समाज ने इन्हें इंसान की जगह शैतान समझा और उसी के अनुरूप निजी और सार्वजनिक जगहों में व्यवहार किया गया। यमदीप उपन्यास में मानवी द्वारा नारी सुधार गृह के सफेदपोश चेहरे को बेनकाब करने के प्रयास में उसमें शामिल नेताओं का चरित्र भी सामने आने लगता है और यही जनता के रक्षक अपनी भक्षक भूमिका में आकर मानवी पर हमला करते हैं। नाजबीबी उस समय मानवी की रक्षा करती है । प्रश्न उठता है जिस मनुष्यता व मानवता की बात मुख्यधारा का समाज करता है क्या वह यही मानवता है कि अपने से कमजोर का शोषण व बलात्कार करे ? नाजबीबी कहती हैं 'सोच रही हूँ, मेम साहब, कि भगवान ने मुझे हिजड़ा बनाकर ठीक ही किया। अगर यह न बनाता तो जरूर मुझे औरत बनाता और तब ये सारे अत्याचार मुझे भी झेलने पड़ते'। मुख्यधारा के लोगों को भी सोचने को मजबूर कर देता कि उनकी मानवता कितनी कमजोर और स्वार्थी है उनसे अच्छे तो यही लोग हैं। जो वक्त पड़ने पर मनुष्यता और उसके मूल्यों की रक्षा करते हैं । नाजबीबी के माध्यम से ही लेखिका ने परिवार त्यागने के बाद थर्ड जेंडर बच्चे के जीवन की होने वाली दुर्दशा, उन्हें बार–बार आने वाली परिवार की याद, समाज द्वारा उनके साथ किया जानेवाला उपेक्षित व्यवहार, किन्नर डेरे की संस्कृति, उनकी रहन–साज बातों का चित्रण किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास का दूसरा प्रमुख पात्र है पत्रकार मानवी। उसके माध्यम से लेखिका ने जीवन की पीड़ा, समाज में उसका होने वाला शोषण, समाज में नारी की ओर देखने का नजरिया, उसकी असुरक्षा आदि बातों का चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास में नारी उद्धारगृह की संस्थापिका रीतादेवी के माध्यम से महिलाओं द्वारा महिलाओं के किए जानेवाले शोषण पर भी प्रकाश डाला है। साथ ही उपन्यासकार ने विधायक मन्नाबाबू के माध्यम से गंदी राजनीति पर भी प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने थर्ड जेंडर जीवन के साथ विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर भी प्रकाश डालता है।

सन 2014 में प्रकशित निर्मला भुराड़िया का उपन्यास 'गुलाम मंडी' ह्यूमन ट्रैफिकिंग अर्थात मानव तस्करी और इसके माध्यम से चलने वाला देह व्यापार तथा किन्नर जीवन की व्यथा पर आधारित उपन्यास है। इसमें आज भी मानव तस्करी की जड़े राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कितनी मजबूत हैं, विभिन्न देशों की लड़कियों को फुसलाकर इस मायावी दुनिया में कैसे फँसाया जाता है। उनका शारीरिक और लैंगिक शोषण आदि पर प्रकाश डालने का प्रयास लेखिका ने किया है। शुरुआत में जहाँ कल्याणी जैसे पात्रों के प्रति मेरे मन में जो गुस्सा उठा था, उपन्यास के आख़िर में वह गुस्सा भी शाँत हो गया। इस उपन्यास में गौतम जैसे पात्र को एक सच्चे पिता के रूप में दिखाया गया है। इससे यह तो सिद्ध हो जाता है कि एक मर्द में दूसरे के बच्चों के लिए भी सच्चे पिता बनने के सभीगुण विद्यमान रहते हैं। प्रस्तुत उपन्यास के पात्र भलेही काल्पनिक हो लेकिन यह यथार्थ जीवन पर आधारित है। लेखिका ने मानवी तस्करी के संदर्भ में लिखने के लिए उन्होंने कई संस्थाओं से जानकारी हासिल की। अमेरिका में आयोजित एक कार्यक्रम में भी डलास पुलिस से इस संदर्भ में जानकारी ली। थर्ड जेंडरों के संदर्भ में लिखने के लिए भी वह कई थर्ड जेंडरों से मिली है। इसलिए इसमें यथार्थ का पुट ज्यादा है।

'गुलाम मंडी' उपन्यास में ह्यूमन ट्रैफिकिंग की मुख्य के कथा के साथ किन्नर जीवन की व्यथा पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया है। साथ ही साथ जाति–पाँती की समस्या, एक ब्यूटी को अपने सौंदर्य का अभिमान, अपनी सुंदरता बरकरार रखने के लिए किए जानेवाले प्रयास, उनको बूढा होने का डर, दलित–सवर्ण भेदभाव आदि को भी चित्रित किया है। प्रस्तुत उपन्यास की प्रमुख नायिकाएँ कल्याणी और जानकी हैं। थर्ड जेंडरों में अंगूरी, रानी, हमीदा आदि प्रमुख पात्र हैं। उपन्यास का प्रारंभ जमनालाल की

सर्पकुटी से होता है। इस सर्पकुटी में कल्याणी थर्ड जेंडर अंगूरी के साथ आती है। इसके बाद कल्याणी और अंगूरी के माध्यम से सीधा चित्रण थर्ड जेंडर जीवन से शुरू होता है। उपन्यास की भूमिका में लेखिका ने श्थर्ड जेंडरश के प्रति कुछ परम्परागत रस्मी बातें भी कहीं हैं, जो संवेदनशीलता की परिचायक कही जा सकती हैं। किन्नरों के विषय में जो अध्याय है, उसमें लेखिका ने बहुत कुछ वही बताया है, जो कि सामान्यतः लोग जानते हैं या अब तो इंटरनेट और सोशल मीडिया पर भी उपलब्ध है, लेकिन सौ साल की वृंदा गुरु की मृत्यु के बाद श्मशान घाट पर बैठकर हमीदा को औपचारिक रूप से गुरु घोषित करने के लिए जिस रस्म का चित्रण किया गया है, वह नवीन है। वैसे तो हम सब जानते हैं कि बांटने से दुःख हल्का होता है, पर समूह में बैठकर सबके सामने अपना दुःख कहना काव्यशास्त्रीय श्विरेचनश का एक व्यावहारिक रूप है। इसके माध्यम से लेखिका ने सभी किन्नरों के मुख से उनकी अतीत–गाथा को कहलवाया है। कमोबेश सभी का अतीत और दुःख एक जैसा ही है। रानी बताती है कि किस तरह वह एक पुरुष की प्रेमिका बनी और ड्रग्स की शिकार बना दी गयी। उसी प्रेमी ने बेवफाई के सन्देह में उसके जननांग को कटवा दिया और बाद में उसे बेच दिया। बाद में वह बचते–बचते वृंदा गुरु के पास आयी। राजा उर्फ रानी के पास शिक्षा है, जो उपन्यास के उत्तरार्ध में उसके सामाजिक और मानसिक विकास को चरमोत्कर्ष तक पहुंचाती है। नायिका कल्याणी के भी वही परम्परागत पूर्वाग्रहयुक्त विचार हैं, लेकिन उसका व्यवहार अपेक्षाकृत संवेदनशील है। इस तरह लेखिका ने जहां आत्ममुग्धा कल्याणी के व्यक्तित्व में कुछ संवेदनहीन विशेषताओं यथा प्रजनन से विमुखता, काले रंग के प्रति घृणा–भाव, क्रोध आदि को समाहित किया है, वहीं हिजड़ों के प्रति करुणा और जानकी को गोद लेना जैसी घटनाओं के द्वारा उसके व्यक्तित्व में सन्तुलन लाने का प्रयास किया है। मॉडलिंग और फिल्मों से जुड़ी कल्याणी अपनी दत्तक पुत्री जानकी उर्फ जेन को अच्छी तरह से पालती–पोसती है। पारिवारिक वातावरण के प्रभाववश जानकी भी ग्लैमर की दुनिया की ओर आकर्षित होती है। विदेशों में स्टेज शो के लिए जानकी को अमेरिका जाने की अनुमति मिल जाती है, क्योंकि गौतम और कल्याणी उसके पीछे के षड्यंत्र से पूर्णतया अपरिचित थे। एक नाटकीय घटनाक्रम के बाद जानकी ह्यूमन ट्रैफिकिंग का शिकार हो जाती है और एक के बाद एक अलग–अलग स्थानों पर भेज दी जाती है।

हमीदा की हत्या के बाद रानी और अंगूरी दोनों बेरोजगार और बेसहारा हो जाती हैं। रानी को बहुरूपिया बनकर जीवनयापन करना पड़ता है और अंगूरी देह–व्यापार की दलदल में फंसकर एड्स की शिकार होती है। जब रानी बहरूपिया बनकर जीवन यापन कर रही होती है तब वह कल्याणी के पुनः सम्पर्क में आ जाती है, जहां से कल्याणी उसे बम्बई लाती है और सेक्स चेंज ऑपरेशन के बाद सामान्य लड़की जैसा व्यक्तित्व बनाने में मदद करती है। एड्स पर डॉक्यूमेंटरी बनाते समय अंगूरी भी कल्याणी के सम्पर्क में आती है। वह भी कल्याणी की संवेदना का आश्रय पाती है। अंग्रेजों के काल से थर्ड जेंडरों की ओर समाज का देखने का नजरिया बदलता गया। अंग्रेजों के जमाने में थर्ड जेंडरों के साथ भेदभावपूर्ण बर्ताव किया जाता। आज भी थर्ड जेंडरों के संदर्भ में यही भेदभावपूर्ण वृत्ति दिखाई देती है।

किन्नर जीवन को आधार बनाकर महेंद्र भीष्म द्वारा 2016 में रचित 'मैं पायलश' हिंदी का पहला जीवनीपरक उपन्यास है, जिसे यथार्थ जीवन में किन्नर गुरु पायल सिंह ने जिया है। एक किन्नर शिशु के बचपन से लेकर उसके जीवन के तमाम पक्षों को इस उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। प्रारंभ में ही पायल कहती हैं कि "मैं उनकी पाँचवीं संतान एक हिजड़ा बच्चे के रूप में संसार में जन्म लेते ही उन्हें तमाम दुःख, कष्ट और संताप देने के लिए आ चुकी थी। सभी को इस बार उनसे बेटे को जन्म देने की पूरी–पूरी उम्मीद थी। उम्मीद तो पहली दीदी के बाद से ही थी, पर जब दूसरी, तीसरी और चौथी बार लगातार कन्या के जन्म लेने से अम्मा और उनकी कोख को गालियाँ मिलने लगी थीं" यह उपन्यास हर कोण से 'पितृसत्ता' के 'ईगो' से टकराता है, हर जगह पुरुष–समाज के दंभ को उजागर करता है। जुगनी या जुगनू अपने माता–पिता की 5 वीं संतान के रूप में जन्म लेती है, और इसके साथ ही पिता और पड़ोस के लोगों का तिरस्कार प्राप्त करना शुरू कर देती है। जब कभी पिताजी दारु के नशे में कोसते, गाली देते, 'ये जुगनी! हम क्षत्रिय वंश में कलंक पैदा हुई है, साली हिजड़ा है...आदि जाने क्या–क्या वे बकते रहते थे। 'हिजड़ा' यह शब्द सबसे पहले मैंने उन्हीं के मुख से सुना था, पर तब मायने से बिल्कुल अनभिज्ञ थी।

यह रचना पायल के जीवट की कहानी कहते हुए समाज के अमानवीय और मानवीय, दोनों पक्षों को सामने रखती है। पायल उर्फ जुगनी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि अपने ही परिवार में उपेक्षा का दंश झेलना इतना यंत्रणापूर्ण हो जाता है कि बच्चा घर छोड़ने के लिए विवश हो जाता है, बाहर के संसार की निर्ममता के बीच भी स्नेह और कोमलता का एहसास उसे मरने नहीं देता। वह रेल, रेलवे स्टेशन पर प्रौढ़ों के द्वारा यौन शोषण का शिकार होती है। अपनी बुद्धिमत्ता से वेशभूषा बदलकर वह तात्कालिक तौर पर अपनी रक्षा कर लेती है। पंडितजी के यहां नौकरी, सिनेमा हाल में नौकरी इन स्थानों पर मानवीय चेहरा पाठकों के समक्ष आता है, प्रमोद द्वारा छेड़छाड़ के दौरान पायल का स्त्रीरूप उजागर हो जाता है तो संतोष सिंह दूसरे स्थान पर पायल की नौकरी की व्यवस्था करते हैं। पायल के भीतर लगातार आगे बढ़ने की भावना बलवती है, इसलिए वह गेट कीपर से प्रोजेक्टर रूम आपरेटर बन जाती है। फिल्मों का सर्वव्यापी प्रभाव भी उसे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता रहता है। वह अपनी मिमिक्री करने की योग्यता, अपनी गायन योग्य आवाज के बल पर लखनऊ में अपना कैरियर बनाना चाहती है, लेकिन किन्नरों द्वारा पकड़ ली जाती है। एक दुखद घटनाक्रम पायल के तन–मन; दोनों को आहत करता है। वह वापस कानपुर लौटकर स्वयं की शरीर के स्तर पर भी बलिष्ठ बनाती है। अगला घटनाक्रम उसे लखनऊ आकाशवाणी में काम दिला देता है। वह अपनी योग्यता के बल पर प्रसिद्धि और घन, दोनों की अधिकारिणी बन गई थी। अशोक के रूप में प्रेम भी पायल को मिला, पर उसी अशोक ने अपने को जीवन से निष्कासित कर देने की प्रतिहिंसा में पायल को पावल गुरु बनने के लिए प्रेरित किया। जीवन में आगे बढ़ने की इच्छा के क्रम में पायल ने यू–ट्यूब और इन्टरनेट का उपयोग भी करना सीखा।

भारत समेत पूरी दुनिया में किन्नरों की संख्या लाखों में है, लेकिन फिर भी साहित्य, समाज, भाषा, संस्कृति, संविधान, सत्ता, सम्पत्ति और जीवन जीने के तमाम अधिकारों से उन्हें सदियों से बेदखल किया जाता रहा हैद्य रोजगार और शिक्षा का आभाव है, जिसके कारण उन्हें सार्वजानिक स्थलों पर भीख मांगनी पड़ती है, तालियाँ पीटकर नेग वसूलने होते हैंद्य इससे भी जरूरत पूरी न हो तो 'वेश्यावृत्ति'के ग़लीज दलदल में उतर जाना होता हैद्य सार्वजनिक स्थलों पर उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता हैद्य सामान्य लोगों के लिए बने अस्पतालों में उन्हें इलाज़ नहीं मिलता, स्कूलों में दाखिला नहीं मिलता, सरकारी–ग़ैरसरकारी जगहों पर रोजगार नहीं मिलताद्य हम उन्हें अश्लीलता की दृष्टि से देखने के आदी हैंद्य बचपन में ही परिवार और समाज से विस्थापित होकर नर्क भोगते लाखों किन्नरों का प्रतिनिधित्व करती है यह कृति।

युवा साहित्यकार भगवंत अनमोल की सन 2017 में प्रकाशित उपन्यासिक कृति 'जिंदगी 50–50' किन्नरों की आंतरिक मनोवृत्तियों को उजागर करने बाली अनोखी रचना है। एक थर्ड जेंडर को उसके अपने परिवार, समाज से मिले दर्द तथा उसके साथ हुए अन्याय आदि को लेकर लिखा गया यह उपन्यास अपने

आप में इस समाज के समक्ष अनेकों प्रश्न करता हुआ दिखाई देता है कि क्या इनको अपने परिवार में सम्मान पूर्वक जीने का अधिकार नहीं है ? क्या किन्नर होना कोई अपराध है ? या थर्ड जेंडर को लेकर समाज की दोगुली मानसिकता में कभी कोई परिवर्तन नहीं आएगा? उपन्यास में हर्षा और सूर्या के माध्यम से उपन्यासकार ने थर्ड जेंडर बच्चा पैदा होने से परिवार वालों को भुगतनी पड़ने वाली पीड़ा तथा थर्ड जेंडरों की परिवार और समाज में होने वाली उपेक्षा को चित्रित किया है। हर्षा उर्फ़ हर्षिता एक किन्नर के रूप में जन्म लेता है। किन्नर रूप में जन्म लेना उसके जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप सिद्ध होता है। उसे न केवल समाज से बल्कि अपने ही पिता द्वारा अनेकों यातनाएं मिलती हैं। यहाँ तक कि उसके जन्म के बाद उसके पिता उसे मार डालने का भी प्रयास करते है और एक दिन घर में किसी के न रहने पर हर्षा के पिता उसे चूहा मारने की दवा पिलाने का प्रयास करते हैं। एक किन्नर संतान का पिता होने से हर्षा के पिता की मानवता मानो मर सी जाती है। समाज से ठुकराए गए अपने किन्नर संतान को प्रेम देना तो दूर उसे किसी न किसी तरह तिरष्कृत करते रहते हैं। हर्षा को निरंतर यह एहसास दिलाया जाता है कि वह औरों से भिन्न है। आस–पड़ोस वाले भी हर्षा को लेकर उसके पिता का मजाक उड़ाया करते हैं जिससे हर्षा के पिता का उसके प्रति क्रोध और बढ़ जाता है। हर्षा के जन्म के बाद उसकी माँ जब उसके जन्म की खुशी में कुछ लोगों को न्योता देने की बात हर्षा के बाबू जी से करती है तब वे अपनी पत्नी को अपमानित करते हुए कहते हैं –

"अरे, आज के बाद न्योता का नाम न लियो। तुम किसकी खातिर न्योता देना चाहती हो? जो कुछ सालों बाद हमारी हर जगह पर नाक कटवाएगा, बेइज्जती करवाएगा? हर कोई इसे हिजड़ा–हिजड़ा पुकारेगा और मुझे हिजड़े का बाप। "

संपूर्ण उपन्यास की कथावस्तु हर्षा और सूर्या के जीवन को केंद्र में रखकर गूँथी गई है। उपन्यास के संदर्भ में प्रो. शर्मिला सक्सेना लिखती हैं– "भगवंत अनमोल का 'जिंदगी 50–50' उपन्यास किन्नरों के जीवन की तल्ख सच्चाइयों को उकेरने वाला समाज की क्रूर हकीकत से परिचित करानेवाला जीवन की अबूझ पहेलियों को सामने लाने का जोखिम उठानेवाला महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। यह युवा साहित्यकार अपनी वास्तविक प्रेम कहानी के द्वारा हिजड़ों के दर्द को बड़ी सहजता से पाठकों के सामने लाने में सफल हुआ है।" उपन्यास के केंद्र में जमींदार रामलखन का परिवार है। परिवार में रामलखन की पत्नी, बड़ा बेटा अनमोल, छोटा बेटा हर्षा, अनमोल की पत्नी आशिका, अनमोल और आशिका का बेटा सूर्या तथा अनमोल की प्रेमिका अनाया का चित्रण मिलता है। हर्षा उर्फ़ हर्षिता के किन्नर समुदाय में शामिल होने के बाद कानपुर के नजदीक के गाँव गोपालपुर की किन्नर समुदाय की मुखिया कस्तूरी, हर्षा के किन्नर साथी तथा मुंबई की थर्ड जेंडरों की मुखिया राधिका आदि का चित्रण मिलता है। 'जिंदगी 50–50' की कथा नरेटर 'मैं' यानि अनमोल इस पूरे उपन्यास की कहानी बताता है। उपन्यास में तीन कथाएँ समांतर चलती हैं। एक अनमोल और अनाया की प्रेम कहानी, दूसरी अनमोल का भाई हर्षा उर्फ़ हर्षिता और उनके परिवार की कहानी, तीसरी अनमोल और आशिका के बेटा सूर्या की कहानी। इन तीनों कहानियों को उपन्यासकार ने प्रसंगानुकूल पूर्वदीप्ति और डायरी शैली में चित्रित किया है। सूर्या के जन्म के बाद अनमोल को प्रसंगानुकूल हर्षा और अनाया की कहानी याद आती है। उपन्यासकार ने इसके लिए पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया है तो हर्षा के थर्ड जेंडर जीवन से संबंधित महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को उजागर करने के लिए उन्होंने डायरी शैली का प्रयोग किया है। प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने हर्षा और सूर्या के माध्यम से थर्ड जेंडर जीवन की पीड़ा, घुटन, मानसिक संघर्ष को चित्रित किया है। इसमें नरेटर अनमोल के परिवार की त्रासदी यह है कि उनका भाई हर्षा और बेटा सूर्या दोनों ही थर्ड जेंडर है। इन्हीं दोनों पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार ने परिवार में थर्ड जेंडर बच्चा पैदा होने से माता–पिता का मानसिक संघर्ष, समाज का थर्ड जेंडर और उसके परिवार के प्रति देखने का उपेक्षित नजरिया, थर्ड जेंडरों की शारीरिक प्रकृति, शरीर पुरुष की तरह और मन स्त्री की तरह होने के कारण थर्ड जेंडरों में होनेवाला स्त्री–सुलभ बर्ताव, लड़कों के प्रति आकर्षण, परिवारवालों द्वारा ऐसे बर्ताव पर रोक लगाने के कारण किन्नरों के मन की घूटन, चोरी–चुपके लड़कियों की तरह कपड़े पहनकर साज– श्रृंगार करने पर परिवार की ओर से होने वाली प्रताड़ना, समाज में होने वाली उपेक्षा, बाहरी दुनिया द्वारा उड़ाया जानेवाला मजाक, इससे तंग आकर किन्नर बच्चों द्वारा किन्नर समुदाय में शामिल होना, इसके बाद उन्हें भुगतनी पड़नेवाली पीड़ा आदि थर्ड जेंडरों संबंधी विभिन्न बातों का विस्तृत चित्रण किया गया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में देखने पर ज्ञात होता है कि हिंदी उपन्यास साहित्य में किन्नर समुदाय की अस्मिता सहित परिवार और समाज में उपेक्षित स्थान, आय के संसाधनों की अनिश्चितता, अकेलापन और उनके जीवन की त्रासदी आदि से संबंधित अनेक प्रश्न उठाए गए हैं। पुरुषोचित शरीर में बसा नारी का मन और उसी के अनुसार होने वाले किन्नर सुलभ बर्ताव के चलते किन्नर अर्थात थर्ड जेंडर परिवार और समाज में उपेक्षा के पात्र बनते हैं। इसमें उनका कोई दोष नहीं होता लेकिन उनका शरीर– विज्ञान कोई समझने का प्रयास ही नहीं करता। ठीक से न स्त्री का न पुरुष का शरीर होने के कारण समाज में उनका मजाक उड़ाया जाता है। इसी के चलते परिवार के लोग भी उनसे नफरत कर बार– बार उन्हें प्रताड़ित करते हैं। इसी प्रताड़ना से तंग आकर थर्ड जेंडर बच्चे खुद परिवार छोड़ किन्नर समुदाय में शामिल हो जाते हैं या खुद माता–पिता उन्हें किन्नरों के हवाले कर देते हैं। एक बार थर्ड जेंडर व्यक्ति परिवार से निष्कासित होने पर कोई उसकी खोज खबर भी लेना आवश्यक नहीं समझता। समाज और परिवार उनसे हमेशा दूर रहने का प्रयास करता है। इससे किन्नर समुदाय की अस्मिता, उनके जीवन की त्रासदी, उनकी प्रामाणिकता, नैतिकता और मानवीयता स्पष्ट रूप में सामने आती है।

आदिवासी, दलित और पिछड़ी जातियों की तरह इन्हें भी विकास के प्रकाश में लाकर समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए सरकारी या गैर सरकारी कठिन श्रम की आवश्यकता है। इनमें संवेदना है, कार्य को बेहतर ढंग से अंजाम देने की शारीरिक शक्ति है। आवश्यकता है उसे जगाने की, इन्हें शिक्षित कर राष्ट्रहित में नियोजित करने की।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. माधव, नीरजा, यमदीप, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, संस्करण 2018
2. भुराड़िया, निर्मला, गुलाम मंडी, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2016
3. भीष्म, महेंद्र, मैं पायल, अमन प्रकाशन, कानपुर, द्वितीय संस्करण 2016
4. भगवंत, अनमोल, जिंदगी 50–50, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, संस्करण 2018
5. डॉ. सिंह, विजेंद्र प्रताप, हिंदी उपन्यासों के अयाने में थर्ड जेंडर, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 2017
6. सं. सिंह, शरद, थर्ड जेंडर विमर्श, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2020

7. सं.(डॉ.) खान, एम. फीरोज, थर्ड जेंडर पर केंद्रित हिंदी का प्रथम उपन्यास यमदीप, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2018
8. (डॉ.) खराटे, मधु, हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 2018
9. सं. (डॉ.) सिंह, विजेंद्र प्रताप, गोंड, रवि कुमार– विमर्श का तीसरा पक्ष, अनंग प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2016
10. सं. खान, एम. फीरोज, थर्ड जेंडर और जिंदगी 50–50, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 2018